Date – 5 May 2022

अनंग ताल झील: दिल्ली

- हाल ही में संस्कृति मंत्रालय ने दक्षिणी दिल्ली में स्थित ऐतिहासिक अनंग ताल झील के जीर्णोद्धार का आदेश दिया है।
- राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण (एनएमए) और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने अधिकारियों से इसके संरक्षण कार्य में तेजी लाने को कहा है ताकि साइट को राष्ट्रीय स्मारक घोषित किया जा सके।

प्रमुख बिंदु:

- यह झील दिल्ली के महरौली में स्थित है, जिसे तोमर राजा अनंगपाल द्वितीय ने 1060 ई. में बनवाया था।
- उन्हें 11वीं शताब्दी में दिल्ली की स्थापना और बसने के लिए जाना जाता है।
- सहस्राब्दी पुराना अनंग ताल दिल्ली के प्रारंभिक काल का प्रतीक है।
- अनंग ताल का राजस्थान से गहरा नाता है क्योंकि महाराजा अनंगपाल पृथ्वीराज चौहान के नाना के रूप में जाने जाते हैं, जिनका किला राय पिथौरा एएसआई की सूची में शामिल है।

अनंगपाल द्वितीय:

- अनंगपाल द्वितीय, जिसे अनंगपाल तोमर के नाम से जाना जाता है, तोमर वंश के थे।
- वह ढिल्लिका पुरी के संस्थापक थे, जिसे अंततः दिल्ली के नाम से जाना जाने लगा।
- कुतुब मीनार से सटी मस्जिद कुव्वत-उल-इस्लाम के लोहे के स्तंभ पर दिल्ली के प्रारंभिक इतिहास के साक्ष्य खुदे हुए हैं।
- कई शिलालेखों और सिक्कों के अध्ययन से पता चलता है कि अनंगपाल तोमर 8वीं-12वीं शताब्दी के बीच दिल्ली और हरियाणा के शासक थे।
- उसने शहर को खंडहरों पर बनवाया और उसकी देखरेख में अनंग ताल बावली और लाल कोट का निर्माण करवाया।
- अनंगपाल तोमर द्वितीय के बाद उनके पोते पृथ्वीराज चौहान उत्तराधिकारी बने।
- दिल्ली सल्तनत की स्थापना 1192 में तराइन (वर्तमान हरियाणा) के युद्ध में घुरिद सेनाओं के खिलाफ पृथ्वीराज चौहान की हार के बाद हुई थी।

Yojna IAS

तोमर राजवंश के बारे में:

- तोमर वंश उत्तर भारत के प्रारंभिक मध्यकालीन लघु राजवंशों में से एक है।
- पौराणिक साक्ष्य (पुराणों के लेखन) हिमालय क्षेत्र के प्रारंभिक राजवंशों में इसके शामिल होने की पुष्टि करते हैं। भट परंपरा के अनुसार तोमर वंश 36 राजपूत जनजातियों में से एक था।
- राजवंश के इतिहास का पता अनंगपाल के शासन काल से लगाया जा सकता है, जिन्होंने 11वीं शताब्दी में दिल्ली शहर की स्थापना की और 1164 में दिल्ली को चौहान (चमन) साम्राज्य में शामिल किया।
- हालांकि दिल्ली बाद में निर्णायक रूप से चौहान साम्राज्य का हिस्सा बन गया, मुद्राशास्त्र और तुलनात्मक रूप से बाद के साहित्यिक साक्ष्यों से संकेत मिलता है कि अनंगपाल और मदनपाल जैसे तोमर राजाओं ने संभवत: वर्ष 1192-93 में मुसलमानों द्वारा दिल्ली की अंतिम विजय तक सामंतों के रूप में कार्य किया।

Swadeep Kumar

Yojna IAS

वायु-स्वतंत्र प्रणोदन (एआईपी)

- हाल ही में फ्रांस के नेवल ग्रुप ने पी-75 भारत परियोजना के लिए बोली को यह कहते हुए खारिज कर दिया कि वह अभी तक एयर-इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन (एआईपी) तकनीक का उपयोग नहीं करती है।
- लगभग 10 देश एआईपी तकनीक विकसित कर चुके हैं या विकसित होने वाले हैं और लगभग 20 देशों के पास एआईपी पनडुब्बियां हैं।

प्रोजेक्ट-75 भारत:

- जून 1999 में, सुरक्षा संबंधी कैबिनेट समिति (सीसीएस) ने 30 वर्षीय पनडुब्बी निर्माण योजना को मंजूरी दी जिसमें 2030 तक 24 पारंपरिक पनडुब्बियों का निर्माण शामिल था।
- पहले चरण में, उत्पादन की दो श्रंखलाएँ स्थापित की जानी थीं – पहली, P-75; दूसरा, P-75i। प्रत्येक श्रृंखला को छह पनडुब्बियों का उत्पादन करना था।

Yojna IAS

- जबकि छह **P-75** पनडुब्बियां डीजल-इलेक्ट्रिक हैं, उन्हें बाद में **AIP** तकनीक से लैस किया जा सकता है।
- इस परियोजना में **43,000** करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से अत्याधुनिक वायु-स्वतंत्र प्रणोदन प्रणाली से लैस छह पारंपरिक पनडुब्बियों के स्वदेशी निर्माण की परिकल्पना की गई है।

वायु स्वतंत्र प्रणोदन:

- एआईपी पारंपरिक गैर-परमाणु पनडुब्बियों के लिए प्रौद्योगिकी है।
- पनडुब्बियां अनिवार्य रूप से दो प्रकार की होती हैं: पारंपरिक और परमाणु।
- पारंपरिक पनडुब्बियां डीजल-इलेक्ट्रिक इंजन का उपयोग करती हैं, जिससे उन्हें ईंधन के दहन के लिए वायुमंडलीय ऑक्सीजन प्राप्त करने के लिए प्रतिदिन सतह पर आना पड़ता है।
- यदि पनडुब्बी एआईपी प्रणाली से लैस है, तो उन्हें सप्ताह में केवल एक बार ऑक्सीजन लेने की आवश्यकता होगी।
- स्वदेश में विकसित एआईपी नौसेना सामग्री अनुसंधान प्रयोगशाला (एनएमआरएल-डीआरडीओ) के प्रमुख मिशनों में से एक है, जिसे नौसेना के लिए डीआरडीओ (रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन) की महत्वाकांक्षी परियोजनाओं में से एक माना जाता है।

ईंधन सेल आधारित एआईपी प्रणाली:

- ईंधन सेल आधारित एआईपी में, इलेक्ट्रोलाइटिक ईंधन सेल केवल पानी के साथ हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के संयोजन से ऊर्जा पैदा करता है, जिससे कम समुद्री प्रदूषणकारी अपशिष्ट उत्पाद उत्पन्न होते हैं।

Yojna IAS

- ये सेल अत्यधिक कुशल हैं और इनमें गतिमान भाग नहीं होते हैं, इस प्रकार यह सुनिश्चित करते हैं कि पनडुब्बी में कम शोर उत्सर्जन हो।

एआईपी के फायदे और नुकसान:

फायदा:

- एआईपी का डीजल इलेक्ट्रिक पनडुब्बी की मारक क्षमता पर बल गुणक प्रभाव पड़ता है क्योंकि यह नाव की पानी के भीतर क्षमता को कई गुना बढ़ा देता है।
- ईंधन सेल आधारित एआईपी अन्य प्रौद्योगिकियों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन करता है।
- एआईपी तकनीक एक पारंपरिक पनडुब्बी को सामान्य डीजल-इलेक्ट्रिक पनडुब्बियों की तुलना में अधिक समय तक जलमग्न रखती है।
- सभी पारंपरिक पनडुब्बियों को अपने जनरेटर चलाने के लिए सतह पर आना पड़ता है, जो उनकी बैटरी को रिचार्ज करते हैं और नाव को पानी के भीतर काम करने में सक्षम बनाते हैं।
- हालांकि, जितनी अधिक बार एक पनडुब्बी सतह पर आती है, उतनी ही अधिक संभावना है कि दुश्मनों द्वारा उसकी निगरानी की जाए।
- डीजल-इलेक्ट्रिक नावों द्वारा दो से तीन दिनों की तुलना में एआईपी लगभग 15 दिनों तक पनडुब्बी को पानी के भीतर रखने में सक्षम है।

नुकसान:

- एआईपी स्थापित करने से नावों की लंबाई और वजन बढ़ जाता है, जिसके लिए तीनों प्रौद्योगिकियों के लिए ऑनबोर्ड प्रेशराइज्ड लिक्विड ऑक्सीजन (LOX) भंडारण और आपूर्ति की आवश्यकता होती है।

Yojna IAS

- **MESMA** (ऑटोनॉमस सबमरीन एनर्जी मॉड्यूल) और स्टर्लिंग इंजन के चलते हुए हिस्सों से कुछ ध्वनिक शोर उत्पन्न होता है, जिससे पनडुब्बी की इकाई लागत लगभग **10%** बढ़ जाती है।

वर्तमान में भारत के पास उपलब्ध पनडुब्बियां:

- भारत में **16** पारंपरिक डीजल-इलेक्ट्रिक पनडुब्बियां हैं, जिन्हें एसएसके के रूप में वर्गीकृत किया गया है। **P-75** के तहत अंतिम दो कलवरी श्रेणी की पनडुब्बियों के चालू होने के साथ, यह संख्या बढ़कर **18** हो जाएगी।
- भारत के पास दो परमाणु बैलिस्टिक पनडुब्बियां भी हैं जिन्हें सबमर्सिबल शिप बैलिस्टिक मिसाइल न्यूक्लियर-एसएसबीएन के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
- **30** साल की परियोजना के तहत पी-**75**आई के पूरा होने तक भारत के पास छह डीजल-इलेक्ट्रिक, छह एआईपी-संचालित और छह परमाणु हमले वाली पनडुब्बियां होने का अनुमान है।

Yojna IAS

Swadeep Kumar

विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक

- विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक का 20वां संस्करण 3 मई, 2022 को विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस (डब्ल्यूपीएफडी) के अवसर पर 'रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स' (आरएसएफ) द्वारा प्रकाशित किया गया था।
- भारत 180 देशों में 150वें स्थान पर है।

विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस:

- 1991 में यूनेस्को के आम सम्मेलन की सिफारिश के बाद, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने वर्ष 1993 में विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस घोषित किया।
- यह दिन वर्ष 1991 में यूनेस्को द्वारा अपनाई गई 'विंडहोक' घोषणा का भी प्रतीक है।
- 1991 की 'विंडहोक घोषणा' एक स्वतंत्र, स्वतंत्र और बहुलवादी प्रेस के विकास से संबंधित है।

Yojna IAS

विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस 2022 की थीम:

- डिजिटल घेराबंदी के तहत पत्रकारिता।

विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक:

- यह 2002 से हर साल रिपोर्टर्स सैन्स फ्रंटियर्स (आरएसएफ) या रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स द्वारा प्रकाशित किया जाता है।
- पेरिस में स्थित, RSF एक स्वतंत्र गैर-सरकारी संगठन है, जिसे संयुक्त राष्ट्र, यूनेस्को, यूरोपीय परिषद और अंतर्राष्ट्रीय फ्रैंकोफ़ोनी संगठन (OIF) का सलाहकार दर्जा प्राप्त है।
- ओआईएफ 54 फ्रेंच भाषी देशों का समूह है।
- यह सूचकांक पत्रकारों के लिए उपलब्ध स्वतंत्रता के स्तर के अनुसार देशों और क्षेत्रों को रैंक करता है। हालांकि, यह पत्रकारिता की गुणवत्ता का संकेतक नहीं है।

स्कोरिंग मानदंड:

- सूचकांक की रैंकिंग प्रत्येक देश या क्षेत्र को दिए गए 0 से 100 के स्कोर पर आधारित होती है, जिसमें 100 सर्वोत्तम संभव स्कोर (प्रेस स्वतंत्रता का उच्चतम संभव स्तर) का प्रतिनिधित्व करते हैं और 0 सबसे खराब का प्रतिनिधित्व करते हैं।

मूल्यांकन के मानदंड:

- राजनीतिक संदर्भ, कानूनी ढांचा, आर्थिक संदर्भ, सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ और सुरक्षा सहित पांच प्रासंगिक संकेतकों का उपयोग करके प्रत्येक देश या क्षेत्र के लिए स्कोर का मूल्यांकन किया जाता है।

Yojna IAS

देशों की रैंकिंग:

शीर्ष और सबसे खराब प्रदर्शन करने वाले:

- नॉर्वे (पहला), डेनमार्क (दूसरा), स्वीडन (तीसरा), एस्टोनिया (चौथा) और फ़िनलैंड (पाँचवाँ) शीर्ष पर है।
- उत्तर कोरिया 180 देशों की सूची में सबसे नीचे है।
- रूस को 155वें स्थान पर रखा गया है।

भारत के पड़ोसी:

- नेपाल वैश्विक रैंकिंग में 30 अंक की छलांग लगाकर 76वें स्थान पर पहुंच गया है।
- सूचकांक ने पाकिस्तान को 157वें, श्रीलंका को 146वें, बांग्लादेश को 162वें और म्यांमार को 176वें स्थान पर रखा है।
- चीन 175वें स्थान पर है।

भारत का प्रदर्शन:

- भारत 2022 में 180 देशों में से आठ स्थान फिसलकर 150वें स्थान पर आ गया है।
- 2016 के सूचकांक में भारत 133वें स्थान पर था, तब से इसकी रैंकिंग में लगातार गिरावट आ रही है।
- रैंकिंग में गिरावट का कारण "पत्रकारों के खिलाफ हिंसा" और "राजनीतिक रूप से पक्षपातपूर्ण मीडिया" में वृद्धि है।

Yojna IAS

भारत की रैंकिंग में गिरावट के कारण:

सरकार का दबाव:

- सूचकांक के अनुसार, भारत में मीडिया लोकतांत्रिक रूप से स्थापित देशों की तुलना में "तेजी से सत्तावादी और/या राष्ट्रवादी सरकारों" के दबाव का सामना कर रहा है।

नीतिगत ढांचे में खामियां:

- हालांकि नीतिगत ढांचा सैद्धांतिक रूप से सुरक्षात्मक है, यह पत्रकारों पर सरकार की मानहानि, देशद्रोह, अदालत की अवमानना और राष्ट्रीय सुरक्षा को "राष्ट्र-विरोधी" के रूप में खतरे में डालने का आरोप लगाता है।

मीडियाकर्मियों के लिए भारत दुनिया का सबसे खतरनाक देश:

- रिपोर्ट के अनुसार, भारत मीडियाकर्मियों के लिए भी दुनिया के सबसे खतरनाक देशों में से एक है।
- पत्रकार सभी प्रकार की शारीरिक हिंसा का सामना करते हैं, जिसमें पुलिस हिंसा, राजनीतिक कार्यकर्ताओं द्वारा घात लगाकर हमला करना, और आपराधिक समूहों या भ्रष्ट स्थानीय अधिकारियों द्वारा घातक प्रतिशोध शामिल है।

भारत में प्रेस की स्वतंत्रता:

- संविधान देश का सर्वोच्च कानून है, जो अनुच्छेद 19 के तहत वाक् और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की गारंटी देता है, जो 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता आदि के संबंध में कुछ अधिकारों के संरक्षण' से संबंधित है।

Yojna IAS

- प्रेस की स्वतंत्रता भारतीय कानूनी प्रणाली द्वारा स्पष्ट रूप से संरक्षित नहीं है, लेकिन यह संविधान के अनुच्छेद 19(1)(ए) के तहत संरक्षित है, जिसके अनुसार "सभी नागरिकों को भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार होगा"।
- रोमेश थापर बनाम मद्रास राज्य, 1950 में सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि प्रेस की स्वतंत्रता सभी लोकतांत्रिक संगठनों की नींव है।
- हालांकि, यहां तक कि प्रेस की स्वतंत्रता भी अपने आप में पूर्ण नहीं है। इस पर अनुच्छेद 19(2) के तहत कुछ प्रतिबंध लगाए गए हैं, जो इस प्रकार हैं-
- भारत की संप्रभुता और अखंडता, राज्य की सुरक्षा, विदेशी राज्यों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध, सार्वजनिक व्यवस्था, शालीनता या नैतिकता या अदालत की अवमानना, मानहानि, किसी भी अपराध के लिए उकसाना।

Yojna IAS

Swadeep Kumar